वर्ड स्मिथ

कहां से आया रेस्टोरेंट शब्द

रेस्टोरेंट (Restaurant) शब्द की उत्पत्ति 18वीं शताब्दी के मध्य (लगभग 1765) में फ्रांस (पेरिस) में हुई, माना जाता है। यह फ्रेंच शब्द restaurer से निकला है, जिसका मतलब है 'पुनर्स्थापित करना' या 'ताजगी देना'।

मूल रूप से, यह पौष्टिक और शक्तिवर्धक सूप (soup) को संदर्भित करता था, जो थके हुए यात्रियों को ताज़ा करता था। 1765 में, पेरिस में बोलेंजर (Boulanger) नामक एक व्यक्ति ने ऐसा स्थान खोला, जहां स्वास्थ्यवर्धक 'रेस्टोरेंट' (शोरबा) मिलता था। शुरू में, यह 'वह जो शक्ति बहाल करता है' (restoring) के अर्थ में प्रयोग किया जाता था। बाद में, यह उन सभी भोजनालयों के लिए इस्तेमाल होने लगा, जहां बैठकर भोजन किया जाता है। इसका संबंध प्राचीन लैटिन शब्द restaurare से भी जोड़ा जाता है। इसका अर्थ मरम्मत या नवीकरण करना है।

संक्षेप में, रेस्टोरेंट वह स्थान था, जिसे शरीर को 'पुनर्स्थापित' या तरोताज़ा करने के लिए पौष्टिक भोजन परोसने के लिए किया जाता था।

नोटिस बोर्ड

रोजगार मेले का आयोजन

- जौनपुर में उत्तर प्रदेश रोजगार मिशन के तहत 28 फरवरी 2026 को राजकीय आईटीआई सिद्दीकपुर, जौनपुर में वृहद रोजगार मेले का आयोजन किया जा रहा है। इस मेले में युवाओं को 12 हजार से लेकर 35 हजार रुपये प्रतिमाह तक की नौकरी पाने का अवसर मिलेगा। जिला सेवायोजन अधिकारी जय प्रकाश पासवान ने बताया कि शासन की मंशा और जिलाधिकारी के निर्देशानुसार यह रोजगार मेला आयोजित किया जा रहा है। इसका उद्देश्य जिले के अधिक से अधिक शिक्षित एवं प्रशिक्षित युवाओं को रोजगार से जोड़ना है। उन्होंने बताया कि मेले में राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर की 60 से अधिक प्रतिष्ठित कंपनियां हिस्सा लेंगी।

राष्ट्रीय सेवा योजना के लिए आवेदन आमंत्रित

- महात्मा ज्योतिबा फुले रुहेलखंड विश्वविद्यालय ने राष्ट्रीय सेवा योजना (एनएसएस) के तहत अंशकालिक कार्यक्रम समन्वयक पद के लिए आवेदन आमंत्रित किए हैं। इस पद से संबंधित शैक्षणिक योग्यता, पात्रता मानदंड, आवेदन प्रक्रिया तथा अंतिम तिथि की विस्तृत जानकारी विश्वविद्यालय की आधिकारिक वेबसाइट पर उपलब्ध है। इच्छुक एवं योग्य अभ्यर्थी निर्धारित दिशा-निर्देशों के अनुसार ऑनलाइन माध्यम से आवेदन कर सकते हैं। विस्तृत विवरण और आवेदन लिंक के लिए विश्वविद्यालय की आधिकारिक वेबसाइट अवश्य देखें।

विदेशी विश्वविद्यालय अवसर या असमानता?

नौ ब्रिटिश विश्वविद्यालय भारत में अपने कैंपस स्थापित करने की तैयारी कर रहे हैं। भारत के उच्च शिक्षा परिदृश्य में यह टर्निंग पॉइंट 2023-24 से आया था। तभी से दुनिया के नामी विश्वविद्यालयों ने हमारे देश की जमीन पर अपने स्वतंत्र कैंपस खोलना शुरू किया। यह बदलाव यूं ही नहीं आया। इसके पीछे है यूनिवर्सिटी ग्रांट्स कमीशन के फॉरेन हायर एजुकेशनल इंस्टिट्यूशंस रेगुलेशंस- 2023 और नेशनल एजुकेशन पॉलिसी-2020 की वह सोच, जिसमें भारत को 'वैश्विक शिक्षा केंद्र' बनाने का सपना देखा गया है। आज यह सपना धीरे-धीरे हकीकत में बदल रहा है। ऑस्ट्रेलिया की डीकिन यूनिवर्सिटी और यूनिवर्सिटी ऑफ़ वोलोंगोंग ने गुजरात में पढ़ाई शुरू करवा दी है। ब्रिटेन की यूनिवर्सिटी ऑफ़ साउथैम्प्टन, गुरुग्राम में अपना कैंपस खोल चुकी है। हैंइलिनॉय इंस्टिट्यूट ऑफ़ टेक्नोलॉजी, यूनिवर्सिटी ऑफ़ लिवरपूल, यूनिवर्सिटी ऑफ़ यॉर्क, यूनिवर्सिटी ऑफ़ ब्रिस्टल, वेस्टर्न सिडनी यूनिवर्सिटी, कोवेंट्री यूनिवर्सिटी और क्वीन्स यूनिवर्सिटी बेलफास्ट को भारत में कैंपस खोलने के लिए लेटर ऑफ इंटेंट मिल चुका है। सवाल यह नहीं है कि विदेशी विश्वविद्यालय आ रहे हैं। असली सवाल है-इससे भारत को क्या मिलेगा, क्या खो सकता है और इसे कैसे संतुलित किया जाए?

राजेश जैन
लेखक

भारत इसलिए बना विदेशी विश्वविद्यालयों का नया ठिकाना

भारत आज दुनिया का सबसे बड़ा युवा बाजार है। 30 वर्ष से कम उम्र की आबादी 50 प्रतिशत से ज्यादा है, लेकिन उच्च शिक्षा में सकल नामांकन अनुपात अभी भी लगभग 30 प्रतिशत के आसपास है। यानी करोड़ों युवा ऐसे हैं, जो बेहतर शिक्षा के मौके तलाश रहे हैं। दूसरी ओर, ब्रिटेन, ऑस्ट्रेलिया और कनाडा जैसे देशों के विश्वविद्यालय घरेलू नामांकन में ठहराव और सरकारी फंडिंग में कटौती झेल रहे हैं। हालिया वीजा सख्ती ने अंतर्राष्ट्रीय छात्रों की संख्या भी प्रभावित की है। ऐसे में भारत उनके लिए हाई-पोटेंशियल मार्केट बनकर उभरा है। यहां अंग्रेजी बोलने वाले छात्र हैं, उभरता मध्यम वर्ग है और अंतर्राष्ट्रीय डिग्री की मजबूत मांग है। आसान शब्दों में कहें, तो यह विन-विन मॉडल है-विदेशी संस्थानों को नया बाजार, भारत को ग्लोबल एजुकेशन का एक्सेस।

घर बैठे मिलेगी विदेशी डिग्री

सबसे बड़ा फायदा है-घर बैठे विदेशी डिग्री। अब भारतीय छात्रों को मास्टर्स या स्पेशलाइज्ड कोर्स के लिए विदेश जाने, लाखों की फीस, वीजा तनाव और महंगे जीवनयापन का सामना नहीं करना पड़ेगा। अनुमान है कि भारत में वही डिग्री 25-30 प्रतिशत कम लागत में मिल सकेगी। इसके साथ उनको अंतर्राष्ट्रीय पाठ्यक्रम, इंडस्ट्री-फोकस्ड ट्रेनिंग, ग्लोबल फैकल्टी एक्सपोजर, बेहतर रिसर्च कल्चर भी मिलेंगे। बिजनेस एनालिटिक्स, साइबर सिक्योरिटी, फिनटेक, कंप्यूटिंग जैसे कोर्स सीधे भविष्य की नौकरियों से जुड़े हैं। इससे स्किल गैप कम हो सकता है और भारतीय ग्रेजुएट्स की ग्लोबल एम्प्लॉयबिलिटी बढ़ सकती है।

प्रतिभा पलायन पर लगेगी रोक

2019 में करीब 5.8 लाख भारतीय छात्र विदेश गए थे। 2023 में यह संख्या 9 लाख तक पहुंच गई। इनमें से 75 प्रतिशत से ज्यादा वहीं बसने की इच्छा रखते हैं। इसका मतलब-देश से प्रतिभा भी जा रही है और अरबों डॉलर विदेशी मुद्रा भी। अगर यही गुणवत्ता भारत में उपलब्ध हो जाए, तो "ब्रेन ड्रेन" की जगह "ब्रेन रिटेंशन" संभव है। विदेशी कैंपस देश के भीतर ही अंतर्राष्ट्रीय माहौल तैयार कर सकते हैं।

रिसर्च और अकादमिक सुधार का मौका

विदेशी विश्वविद्यालय सिर्फ क्लासरूम नहीं लाते-वे साथ लाते हैं रिसर्च कल्चर, गवर्नेंस मॉडल और अकादमिक डिसिप्लिन। संयुक्त रिसर्च सेंटर, फैकल्टी एक्सचेंज और साझा प्रोजेक्ट्स के जरिए भारतीय संस्थानों की क्षमता बढ़ सकती है। पहले से ही भारत के पास मजबूत आधार है-जैसे इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी बॉम्बे, इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ साइंस बेंगलुरु और यूनिवर्सिटी ऑफ दिल्ली जैसे संस्थान। सही सहयोग हुआ, तो भारत सिर्फ स्टूडेंट-सोर्स देश नहीं रहेगा, बल्कि नॉलेज-प्रोड्यूसर बनेगा।

लचीलापन और जवाबदेही दोनों जरूरी

यूजीसी ने विदेशी विश्वविद्यालयों को पाठ्यक्रम, फीस और प्रवेश में काफी स्वायत्तता दी है ताकि वे तेजी से काम शुरू कर सकें, लेकिन अब जरूरत है स्मार्ट रेगुलेशन की। हमें ऐसा मॉडल चाहिए, जिसमें टॉप-रैंक संस्थानों को ऑपरेशनल फ्रीडम मिले, फीस स्ट्रक्चर पारदर्शी हो, छात्र अधिकार सुरक्षित रहें, न्यूनतम छात्रवृत्ति को अनिवार्य किया जाए और अकादमिक गुणवत्ता की नियमित ऑडिट हो।

देश को इस रणनीति की दरकार

हर विदेशी कैंपस में इडब्यूएस और वंचित वर्ग के लिए स्कॉलरशिप अनिवार्य की जाए, अकेले कैंपस नहीं-भारतीय संस्थानों के साथ साझा मॉडल को बढ़ावा दिया जाए, रिसर्च और फैकल्टी डेवलपमेंट को प्राथमिकता मिले, सिर्फ टीचिंग तक सीमित न रहा जाए, पाठ्यक्रमों का भारतीयकरण हो ताकि वे यहां की अर्थव्यवस्था, समाज और उद्योग से जुड़े रहें और दीर्घकाल में भारत को अपनी "आईवी लीग" तैयार करनी होगी, जहां आईआईटी, आईआईएम और एम्स जैसे संस्थान वैश्विक रैंकिंग में शीर्ष पर हों। विदेशी विश्वविद्यालयों का भारत आना सिर्फ शिक्षा सुधार नहीं-यह कूटनीति, अर्थव्यवस्था और सॉफ्ट पावर से भी जुड़ा है। सही नीति के साथ यह पहल भारत को एशिया का एजुकेशन हब बना सकती है, लेकिन अगर इसे केवल बाजार के हवाले छोड़ दिया गया, तो यह अमीरों की शिक्षा बनकर रह जाएगी। आज भारत एक दोराहे पर खड़ा है-एक रास्ता वैश्विक ज्ञान नेतृत्व की ओर जाता है, दूसरा नई शैक्षिक असमानता की तरफ। फैसला हमें करना है।

कुछ चिताएं भी हैं

- सबसे बड़ी चिंता है-वहनीयता। विदेशी कैंपस की फीस भले विदेश से कम हो, लेकिन भारतीय औसत आय के हिसाब से यह अभी भी बहुत ज्यादा है। खतरा यह है कि ये संस्थान सिर्फ अमीर वर्ग तक सीमित रह जाएं। इससे शिक्षा में सामाजिक असमानता और गहरी हो सकती है-जो नई शिक्षा नीति- 2020 के समावेशी शिक्षा के लक्ष्य के खिलाफ है।
- दूसरी चुनौती है-व्यावसायीकरण। अगर रेगुलेशन कमजोर रहा, तो कुछ विदेशी संस्थान शिक्षा को प्रोडक्ट की तरह बेच सकते हैं। चीन और दक्षिण-पूर्व एशिया के उदाहरण बताते हैं कि कम नामांकन और ऊंची लागत के कारण कई विदेशी कैंपस कुछ साल में बंद भी हो गए।
- तीसरा मुद्दा है-स्थानीय प्रासंगिकता। अगर पाठ्यक्रम भारतीय सामाजिक-आर्थिक जरूरतों से कटे रहे, स्थानीय फैकल्टी शामिल न हो और इंडियन कॉन्टेक्स्ट गायब हो तो ये कैंपस "एलिट आइलैंड" बनकर रह जाएंगे।

किस्सा कैंपस का

कला हो या विज्ञान जीत जाओगे तो सिकंदर कहलाओगे

बात साल 1990 की है। मैंने इंटरमीडिएट परीक्षा पास की थी। 51 प्रतिशत मात्र मैं इंटरमीडिएट में ला पाया था। मुझे अब कॉलेज में प्रवेश लेना था। हल्द्वानी शहर में एमबी डिग्री कॉलेज ही एकमात्र उच्च शिक्षा का संस्थान था। जुलाई का उमस से भरा हुआ दिन, मैं अपने बड़े भाई जो पंतनगर विश्वविद्यालय में पढ़ते थे, उनके साथ एमबी डिग्री कॉलेज आया। स्कूल की बंधनों से भरी हुई जिंदगी से बाहर निकल कर अब हम कॉलेज की जिंदगी में आ रहे थे।

एमबी डिग्री कॉलेज के बड़े से फील्ड में बहुत सारे लड़के लड़कियां घूम रहे थे। मैं बीएससी करना चाहता था लेकिन मेरे प्रतिशत कम थे। खैर अपने बड़े भाई के साथ मैं उस कक्षा में गया, जहां बीएससी में एडमिशन दिया जा रहा था। मैं काउंसिलिंग के लिए वहां गया, पता चला कि बीएससी में प्रवेश की कम से कम मेरिट 58 प्रतिशत की है जबकि मेरे मात्र 51 प्रतिशत थे। काउंटर पर पता चला कि वेटिंग में कुछ नीचे तो आ सकता है लेकिन कई वर्षों से 55 प्रतिशत से नीचे मेरिट कभी नहीं गई है इसलिए बीएससी में प्रवेश नहीं मिल सकेगा हां अगर बायोलॉजी वाले हैं तो कुछ उम्मीद की जा सकती है लेकिन सच्चाई यह थी कि मेरे पास इंटरमीडिएट में बायोलॉजी के सब्जेक्ट ही नहीं थे इसलिए वह रास्ता तो वैसे ही मेरे लिए बंद था।

मैं बहुत निराश था। मैंने कुछ लोगों से बात की। एमबी डिग्री कॉलेज के कुछ कर्मचारी हमारे जानने वाले थे। उनसे मिलने गया और उन्होंने भी स्पष्ट कर दिया कि बीएससी में मुझे एडमिशन नहीं मिल पाएगा। दूसरा चारा यह था कि मैं बीकॉम में एडमिशन ले लूं लेकिन कॉमर्स मेरी इंटरमीडिएट में नहीं थी और मेरे समझ से बहुत बाहर भी थी। अब एक ही रास्ता बसता था कि बीए में एडमिशन लेने का। इस दौरान हम दोनों भाई कला संकाय के एक प्राचार्य से मिले और उन्हें बताया तो उन्होंने भी यही कहा कि इतने कम प्रतिशत में केवल ह्यूमैनिटीज के सब्जेक्ट ही लिए जा सकते हैं और बेहतर होगा कि आपका भाई कॉलेज से बीए में प्रवेश ले ले। मैं बहुत निराश था क्योंकि बीए करने वालों का भविष्य उस समय बहुत अच्छा नहीं माना जाता था लेकिन वह प्राचार्य महोदय जो कि अर्थशास्त्र पढ़ाया करते थे, वह प्रोफेसर रौतेला थे, उन्होंने बताया कि ऐसा नहीं है कि बीए करने से सारे रास्ते बंद हो जाते हैं। अगर वास्तव में आप कुछ करना चाहते हो तो बहुत सारी कॉम्पिटेटिव परीक्षाओं की तैयारी आर्ट्स में रहते हुए आप बेहतर कर सकते हो क्योंकि आप ज्यादा समय परीक्षा की तैयारी में लगा सकते हो और परीक्षाओं की तैयारी में आर्ट्स के विषय सामान्य अध्ययन की तैयारी में भी मददगार हो सकते हैं। आप बीए में प्रवेश लें और उन्होंने तमाम ऐसे लोगों के नाम बताएं जिन्होंने बीए करने के पश्चात आईएएस, पीसीएस एसएससी और विभिन्न सरकारी परीक्षाओं में सफलता प्राप्त की और अफसर बने। कोई और चारा नही देखते हुए अंतत: मैंने भी यही निर्णय लिया और बीए में प्रवेश ले लिया। प्रोफेसर रौतेला के सुझाव से मैंने इतिहास, अर्थशास्त्र और मनोविज्ञान विषय लिया और मन में धारण कर लिया कि अब मुझे सरकार के किसी अफसर की पोजीशन को पाना है। कैंपस का यह पहला दिन हमेशा मेरे जहन में रहा, बीए चलता रहा, लेकिन मस्तिष्क में यह बात लगातार बनी रही कि सरकारी परीक्षाओं की तैयारी करनी है और यही वह दिन था, जब मेरी मेरे जीवन में टर्निंग पॉइंट आया और मैं एक विज्ञान का छात्र, एक कला वर्ग के छात्र के रूप में परिवर्तित हुआ और कालांतर में उत्तर प्रदेश पीसीएस एवं उत्तराखंड पीसीएस दोनों परीक्षा में सफलता प्राप्त करते हुए दो-दो सरकारी नौकरियां प्राप्त की और वर्तमान में आरटीओ के पद पर अपनी सेवाएं दे रहा हूं। इससे पूर्व उत्तर प्रदेश सरकार में 8 वर्ष डिप्टी जेलर के रूप में अपनी सेवा दे चुका हूं। कला हो या विज्ञान जीत जाओगे तो सिकंदर कहलाओगे और यही कैंपस के पहले दिन की सीख थी, जो आज भी अनुभूत होती है।

विमल पांडेय
आरटीओ, पौड़ी गढ़वाल
संभाग (उत्तराखंड)

करेंट अफेयर्स

- हाल ही में भारतीय कप्तान हरमनप्रीत कौर ने महिला अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में सबसे अधिक मैच खेलने वाली खिलाड़ी बनकर इतिहास रच दिया। उन्होंने यह उपलब्धि कैनबरा में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ दूसरे टी20 अंतरराष्ट्रीय मैच के दौरान हासिल की। अपने 356वें अंतरराष्ट्रीय मैच के साथ, हरमनप्रीत ने न्यूजीलैंड की दिग्गज खिलाड़ी सूजी बेट्स को पीछे छोड़ दिया, जिन्होंने पहले 355 मैचों के साथ यह रिकॉर्ड बनाया था। यह ऐतिहासिक उपलब्धि महिला क्रिकेट की महानतम खिलाड़ियों में से एक के रूप में हरमनप्रीत कौर की विरासत को और मजबूत करती है।
- हाल ही में बोंग ने बाफ्टा अवार्ड्स 2026 में सर्वश्रेष्ठ बाल एवं पारिवारिक फिल्म श्रेणी जीतकर इतिहास रच दिया है। मणिपुरी भाषा में बनी यह पहली भारतीय फिल्म प्रतिष्ठित ब्रिटिश अकादमी फिल्म अवार्ड्स में इस श्रेणी में पुरस्कार जीतने वाली पहली भारतीय फिल्म बन गई है। फरहान अख्तर और रितेश सिधवानी द्वारा समर्थित, बोंग इस वर्ष एकमात्र भारतीय नामांकित फिल्म थी और इसने क्षेत्रीय भारतीय कहानी कहने को वैश्विक पहचान दिलाई।
- माइक्रोसॉफ्ट ने आशा शर्मा को माइक्रोसॉफ्ट गेमिंग का नया सीईओ और एक्सबॉक्स का प्रमुख नियुक्त किया है, जो 2026 में एक महत्वपूर्ण नेतृत्व परिवर्तन का संकेत है। भारतीय मूल की यह कार्यकारी लंबे समय से एक्सबॉक्स के प्रमुख रहे फिल स्पेंसर का स्थान लेंगी, जो 2014 से इस विभाग का नेतृत्व करने के बाद सेवानिवृत्त हो रहे हैं।

जॉब अलर्ट

यूनियन पब्लिक सर्विस कमीशन

- पद का नाम-टाइप ग्रुप A और ग्रुप B सर्विसेज़
- पदों की संख्या 933
- पद-IAS, IPS, IFS, IRS, इंडियन ऑडिट एंड अकाउंट्स, DANICS, DANIPS, और दूसरी सेंट्रल सर्विसेज़
- योग्यता- ग्रेजुएट डिग्री (कोई भी डिसिप्लिन)
- आयु- 21-32 साल (01-08-2026 को)
- एग्जाम स्टेज प्रीलिमिनरी, मेन, इंटरव्यू
- आवेदन की आखिरी तारीख 27/02/2026
- वेबसाइट www.upsc.gov.in

ऑल इंडिया इंस्टिट्यूट ऑफ़ मेडिकल साइंसेज (AIIMS)

- पद का नाम-नर्सिंग ऑफिसर
- पदों की संख्या-2551
- सैलरी पे लेवल-07 पे मैट्रिक्स में (प्री-रिवाइज़्ड पे बैंड-2 9300-34800 के साथ ग्रेड पे 4600/-)
- योग्यता- B.Sc. (ऑनर्स) नर्सिंग / B.Sc. नर्सिंग या पोस्ट बेसिक B.Sc. नर्सिंग या जनरल नर्सिंग और मिडवाइफरी में डिप्लोमा, वैलिड रजिस्ट्रेशन के साथ + 2 साल का एक्सपीरियंस (डिप्लोमा होल्डर्स के लिए)
- आयु- 18 से 30 साल
- आवेदन की आखिरी तारीख 16.03.2026
- वेबसाइट www.aiimsexams.ac.in

स्टेट बैंक ऑफ़ इंडिया (SBI)

- पद का नाम- असिस्टेंट वाइस प्रेसिडेंट (IS ऑडिट) - कॉन्ट्रैक्ट पर, डिप्टी मैनेजर (IS ऑडिट) - रेगुलर, डिप्टी मैनेजर (चार्टर्ड अकाउंटेंट-इंटरनल ऑडिट)- रेगुलर
- जॉब टाइप रेगुलर / कॉन्ट्रैक्ट पर
- योग्यता- BE/BTech/BSc/MTech/MSc/MCA/BCA/CA संबंधित सब्जेक्ट में
- सिलेक्शन प्रोसेस शॉर्टलिस्टिंग और इंटरव्यू (कॉन्ट्रैक्ट के लिए CTC नेगोशिएशन के साथ)
- जॉब लोकेशन मुंबई / हैदराबाद / मोबाइल ड्यूटी / सर्कल ऑडिट ऑफिस
- आवेदन की अंतिम तिथि-15/03/2026
- वेबसाइट https://sbi.co.in

इंटीरियर डेकोरेशन: क्रिएटिविटी और मॉडर्न लाइफ स्टाइल का नया भविष्य

आज के दौर में एक सुंदर और सुव्यवस्थित घर केवल विलासिता की वस्तु नहीं, बल्कि मानसिक शांति और व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति बन चुका है। यही कारण है कि इंटीरियर डेकोरेशन उन विद्यार्थियों के लिए एक स्वर्णिम अवसर बनकर उभरा है, जिनकी सोच लीक से हटकर है और जो रंगों, आकृतियों तथा सजावट के माध्यम से कहानियां बुनना जानते हैं। बदलती लाइफस्टाइल ने इस क्षेत्र को व्यावसायिक रूप से इतना समृद्ध कर दिया है कि अब यह केवल बड़े बंगलों तक सीमित न रहकर मध्यम वर्गीय घरों, कॉर्पोरेट ऑफिसों, कैफे और स्टार्टअप्स की प्राथमिक जरूरत बन गया है। यदि आप में रचनात्मकता का बीज है और आप तकनीकी बारीकियों को समझने का धैर्य रखते हैं, तो इंटीरियर डेकोरेशन का क्षेत्र आपको न केवल आर्थिक संपन्नता देगा, बल्कि हर नए प्रोजेक्ट के साथ आपकी कला को एक नई पहचान भी प्रदान करेगा।

कला और विज्ञान का संतुलन

इंटीरियर डेकोरेशन को अक्सर केवल सजावट मान लिया जाता है, लेकिन वास्तव में यह किसी स्थान के अंदरूनी हिस्से को इस तरह रूपांतरित करने की कला है कि वह देखने में आकर्षक होने के साथ-साथ रहने के लिए आरामदायक भी हो। इसमें दीवारों के रंगों के चुनाव से लेकर फर्नीचर की बनावट, पर्दों का कपड़ा, लाइटिंग का कोण और फर्श के टेक्सचर तक हर छोटी चीज पर ध्यान दिया जाता है। एक सफल डेकोरेटर वह है, जो क्लाइंट की जरूरतों को समझे और सीमित बजट व स्थान में सर्वोत्तम परिणाम दे सके। इस कोर्स के दौरान विद्यार्थियों को डिजाइन के सिद्धांत, स्पेस प्लानिंग और सामग्री (मटेरियल) की पहचान सिखाई जाती है। उन्हें यह भी सिखाया जाता है कि कैसे लाइटिंग के जरिए किसी छोटे कमरे को बड़ा दिखाया जा सकता है या कैसे रंगों के सही इस्तेमाल से ऑफिस के माहौल को तनावमुक्त बनाया जा सकता है।

शैक्षणिक विकल्प और पाठ्यक्रम

इंटीरियर डेकोरेशन में करियर बनाने के लिए कई तरह के कोर्सेज उपलब्ध हैं, जिन्हें आप अपनी शैक्षणिक योग्यता और समय के अनुसार चुन सकते हैं:

सर्टिफिकेट कोर्सेज (6 माह से 1 वर्ष): यह उन लोगों के लिए है जो बेसिक स्किल्स जल्दी सीखकर काम शुरू करना चाहते हैं।

डिप्लोमा कोर्सेज (1 से 2 वर्ष): इसमें डिजाइनिंग की अधिक गहराई से जानकारी दी जाती है।

बैचलर डिग्री (3 से 4 वर्ष): जैसे B.Des या B.Sc इन इंटीरियर डिजाइन। यह एक व्यापक डिग्री है जो आपको ग्लोबल स्टैंडर्ड्स की समझ देती है।

मास्टर्स डिग्री (2 वर्ष): ग्रेजुएशन के बाद विशेषज्ञता (Specialization) हासिल करने के लिए।

करियर की संभावनाएं और आय

इस फील्ड में करियर के विकल्प बेहद विविधतापूर्ण हैं। कोर्स पूरा करने के बाद आप निम्नलिखित क्षेत्रों में हाथ आजमा सकते हैं।

इंटीरियर डेकोरेटर: घरों और ऑफिसों का मेकओवर करना।

सेट डिजाइनर: फिल्मों, टीवी शो और थिएटर के लिए सेट तैयार करना।

फर्नीचर कंसल्टेंट: मॉड्यूलर किचन और मॉडर्न फर्नीचर फर्म्स में काम करना।

फ्रीलांसर: खुद की कंसल्टेंसी खोलकर स्वतंत्र रूप से प्रोजेक्ट्स लेना।

सैलरी पैकेज: इस क्षेत्र में शुरुआत 2 से 4 लाख रुपये प्रति वर्ष से होती है। लेकिन, जैसे-जैसे आपका पोर्टफोलियो और अनुभव बढ़ता है, आपकी आय की कोई सीमा नहीं रहती। एक स्थापित इंटीरियर डेकोरेटर साल के 15-20 लाख रुपये से लेकर करोड़ों में कमा सकता है।

भारत के प्रमुख शिक्षण संस्थान

बेहतर भविष्य के लिए सही संस्थान का चयन अनिवार्य है। भारत के कुछ टॉप कॉलेज जहां आप आवेदन कर सकते हैं।

- **नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ डिजाइन अहमदाबाद:** देश का सबसे प्रतिष्ठित डिजाइन संस्थान।
- **नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ फैशन टेक्नोलॉजी:** यहां के डिजाइन कोर्स विश्व स्तर पर मान्य हैं।
- **पर्ल एकेडमी:** आधुनिक इंफ्रास्ट्रक्चर और इंडस्ट्री एक्सपोजर के लिए मशहूर।
- **JD इंस्टीट्यूट ऑफ फैशन टेक्नोलॉजी:** यहां प्रैक्टिकल लर्निंग पर अधिक जोर दिया जाता है।
- **Arch एकेडमी ऑफ डिजाइन:** जयपुर स्थित यह संस्थान अपनी क्रिएटिविटी के लिए जाना जाता है।